मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

कोरोना काल में सब्जीयों के किसानों के लिए परामर्श

डॉ कपिल देव आमेटा
सहायक प्राध्यापक राजस्थान कृषि महाविध्यालय
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रोधौगिकी विश्वविध्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

किसान साथियों जैसा की विदित है वैश्विक महामारी कोरोना के कारण भारतवर्ष के साथ लगभग पूरा विश्व भी पूर्णतः तालाबंदी के दौर से गुजर रहा हैं यह दुर्भाग्यपूर्ण समय सभी लोगों के लिए दुःखद है, हर कोई इस संकटकाल में त्रस्त है चाहे वो किसान हो, मजदुर वर्ग हो, व्यापारी हो अथवा कर्मचारी हो । सब्जी उगाने वाला किसान इस दौर में अधिक त्रस्त है क्यूंकि सब्जीयों की भण्डारण क्षमता बहुत कम होती है एवं तालाबंदी में परिवहन नहीं होने के कारण सब्जीयों की मांग भी कम हो रही है । इस लेख में सब्जी के किसानों को इस मौसम में लगाई जाने वाली फसलों एवं उनकी देखभाल को लेकर कुछ सुझाव दिए गए है ।

कोरोना वायरस के इस समय में सब्जीयां लगाने वाले किसान इन मुख्य बातों का ध्यान रखेः

- खेत के आस पास साफ़ सफाई का विशेष ध्यान रखे, कोई भी कचरा, फसल के अवशेष अथवा किसी भी प्रकार की गंदगी नहीं रहने दे ।
- घर से बाहर निकलने से पहले मास्क अथवा कोई भी कपडा या गमछा मुह एवं नाक पर ढक ले ।
- बार बार साबुन से बढ़िया से हाथ धोवे ।
- खेत में काम करते समय उचित दुरी बनाये रखे, विशेष तौर पर चाय एवं भोजन के समय दूर दूर बेठे एवं खाने पिने से पहले साबुन से हाथ धोवे ।
- किसान अपने यहाँ काम करने वाले सभी मजदूरों को साफ़ सफाई, सामाजिक दुरी एवं मास्क आदि के बारे समझाए एवं यह निश्चित करे की सभी लग इन बातों का विशेष ध्यान रख रहे है ।
- बाहर से आये अथवा नए मजदूरों को काम पर रखने से पहले यह निश्चित कर ले की उन लोगो में कोई भी अस्वस्थ नहीं हो साथ ही अनजान व्यक्तियों को काम पर नहीं रखे, हो सकता है की वो बाहर से संक्रमित होकर आये हो ।
- सब्जियों के खेतो से विशेष रूप से जहाँ से कटाई और तुडाई हो रही है वहां से पशु एवं अन्य पालतू जानवरों को दूर रखे ।
- खेत से सब्जीयों की तुड़ाई के उपरांत साफ़ पानी से धोकर थोड़ी देर छाया में सुखा कर उचित प्रकार से पैकिंग करे ।
- सब्जीयों की पैकिंग वाले स्थान पर साफ़ सफाई का ध्यान रखे एवं सब्जीयाँ किसी प्रकार से मिट्टी के संपर्क में न आने पाए अन्यथा संक्रमण का खतरा रहता है ।
- खेत में उत्पादित सब्जीयों के विपणन के लिए होल सेल बाजार अथवा मंडियों से संपर्क में रहे, ऐसे समय में घूमकर गाँव गलियों में सब्जीयाँ बेचना खतरनाक हो सकता है ।
- सब्जीयाँ बेचने के लिए रोज़ रोज़ शहर या मंडी नहीं जावे, ऐसे में सब्जीयों की तुड़ाई के लिए सप्ताह में दो या तिन दिन निश्चित कर ले ।
- बाजार में सब्जीयों के भाव उसकी गुणवत्ता से बढ़ते है अतः सब्जीयों के टोकरे में कोई भी सड़ी–गली, कटी हुई, ज्यादा पकी हुई अथवा खाने के अयोग्य सब्जीयाँ नहीं रहनी चाहिए, अन्यथा थोड़ी सी खराब सब्जीयों की वजह से पुरे टोकरे की सब्जी के भाव कम मिलेंगे ।
- सब्जीयों की भण्डारण क्षमता कम होती है एवं गर्मी के मौसम में सब्जीयों से नमी जल्दी उड़ने के कारण उनको को अधिक देर तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता है, अतः सब्जीयों की तुड़ाई सुबह जल्दी अथवा देर शाम को करनी चाहिये जिससे सब्जीयों को सुबह तुरंत मंडी अथवा बाजार तक पहुचाया जा सके ।

- कोरोना के इस काल में आने वाले समय में पर्यटन की संभावित कमी को देखते हुवे किसी प्रकार की विदेशी सब्जी जैसे पार्सले, सेलेरी, लेटुस अथवा बेसिल आदि की खेती अधिक क्षेत्र में करने से बचे ।
- गर्मी के मौसम में फसलों को बार बार सिंचाई की आवश्यकता होती है अतः 5–7 दिन में फसलों की सिंचाई करते रहे ताकि फसलों से वांछित उत्पादन लिया जा सके ।
- सब्जी के खेतों में नमी एवं आद्रता अधिक रहने की वजह से कई प्रकार के कीट एवं बीमारियाँ फसल को नुक्सान पहुंचा सकती है, अतः पादप सरंक्षण का विशेष ध्यान रखे ।
- इस मौसम में कद्दुवर्गीय कुल की लगभग सभी सब्जीयाँ उगाई जाती है, साथ ही सोलेनेसी परिवार की सब्जीयाँ जैसे टमाटर, बैगन एवं मिर्च की खेती की जाती है, इसके अलावा गवार फली, भिन्डी, चंवला एवं जमिकंदिय फसलें जैसे शकरकंद, रतालू, सुरन, हल्दी, अरवी, अदरक की खेती के लिए यह मौसम अनुकूल होता है ।

इन फसलों में मुख्य रूप से ध्यान देने वाले बिंदु इस प्रकार हैः

- कद्दुवर्गीय फसलों में मुख्यतयाः कद्दू, तरबूज, खरबूज, लौकी, तुरई, करेला एवं ककड़ी की खेती इस समय की जाती है, इन फसलों की बुवाई मार्च से लेकर जुलाई महीने तक की जा सकती है, गर्मी के मौसम में सिंचाई की अधिक आवश्यकता होने के कारण इन सब्जीयों की खेती सिंचाई की अनुकूल सुविधा होने पर ही करनी चाहिए । फसलों के इस वर्ग में सबसे अधिक क्षति कद्दू का लाल भृंग नमक कीट से होती है, इसके वयस्क पौधे की पत्तियां खाते है एवं उनपर छेद कर देते है, इसका प्रकोप इतना तीव्र होता है की पौधे की वृद्धि रुक जाती है एवं पौधा मर जाता है, इसके नियंत्रण के लिए प्रोपेनोफोस एवं साईपरमेथ्रिन का छिडकाव करना चाहिए । चूर्णिल एवं मृदु रोमिल आसिता रोग लगभग सभी प्रकार की कद्दुवार्गीय सब्जीयों में होने वाली मुख्य बीमारियाँ है, ये कवक जनित रोग होते है एवं इनकी रोकथाम के लिए बीजोपचार से लेकर जल निकास की उचित व्यवस्था के साथ साथ कवकनाशी का छिडकाव करना चाहिए । ग्रीन मोटल वायरस बभी इन सब्जीयों में बहुत नुकसान करता है, विशेष रूप से तुरई, ककड़ी एवं टिंडा में इस वायरस का प्रकोप अधिक देखा जाता है । इसकी रोकथाम के लिए गुणवत्ता वाले एवं रोगों से मुक्त बीजो का ही प्रयोग करना चाहिए एवं पौधो पर किसी प्रकार के रस चूसने वाले कीटों को नहीं पनपने देना चाहिए ।
- सोलेनेसी परिवार की सब्जीयों में इस मौसम में टमाटर, बैंगन एवं मिर्च की खेती की जा सकती है, इन सब्जीयों की नर्सरी तैयार करने के लिए सर्व प्रथम बाविस्टिन अथवा थाईरम 2–3 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से अथवा ट्राईकोडरमा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से बीजोपचार कर बीजों को क़तार में बुवाई करे । नर्सरी में लगातार नमी बनाये रखने के लिए दिन में दो बार झारे से हल्की सिंचाई करे, इस मौसम में पौधे सामान्यतया 20–25 दिन में रोपण योग्य हो जाते है । पौधारोपण आवश्यक रूप से शाम के समय करे एवं इसके तुरंत बाद हल्की सिंचाई करे । मृदा एवं पौधे की अवस्था को ध्यान में रखते हुए कम से कम सप्ताह में एक बार सिंचाई करे, मिर्च में पर्ण कुंचन वायरस के प्रकोप को मद्देनज़र रखते हुए सफ़ेद मक्खी का नियंत्रण अति आवश्यक है इस हेतु नीम का तेल अथवा एसताम्प्रिड या इमिड़ोक्लोर्पिड का परनिया छिडकाव करे । बैंगन में फल एवं तना बेधक किट का प्रकोप अधिक होता है साथ ही टमाटर में सफ़ेद मक्खी, लीफ माइनर आदि कीटों का प्रकोप मुख्या रूप से होता है अतः इन कीटों एवं बिमारियों का समय पर उचित नियंत्रण करे ५ मिर्च की फसल में अगर बाज़ार भाव उचित नहीं मिल पा रहे है अथवा बेचान में कोई समस्या है तो मिर्च की फसल से तुड़ाई नहीं करे एवं फसल को साबुत लाल मिर्च उत्पादन के लिए रखा जा सकता है । टमाटर में तुड़ाई की अवस्था का विशेष ध्यान रखना है क्यूंकि लाल पके हुए फल गर्मी के मौसम अति शिघ्र खराब हो जाते है अतः फलों को रंग बदलने की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए ।
- जमिकंदिय सब्जीयों की खेती के लिए बुवाई का उचित समय मई के प्रथम सप्ताह से लेकर जून का प्रथम पखवाडा होता है, इन सब्जीयों में शकरकंद, रतालू, सुरन, हल्दी, अरवी, अदरक सम्मिलित होते है । शकरकंद के अतिरिक्त जमिकंदिय सब्जीयों की खेती में लागत का मुख्य भाग रोपण सामग्री का होती है अतः इन फसलों की खेती बरसात के भरोसे नहीं करनी चाहिए अर्थात सिंचाई की अनुकूल सुविधा होने पर ही इन फसलों की खेती करनी चाहिए । जमिकंदिय फसलों के लिए अधिक उपजाऊ, जीवांश पदार्थ युक्त, दोमट, एवं अच्छे जल निकास वाली मृदाओं का चयन करना चाहिए । रतालू एवं अदरक में कई प्रकार की कवक

जनित व्याधियां पौधों की वृद्धि एवं विकास को बाधित करती है, अतः खेत तैयार करते समय मृदा का उपचार किया जाना चाहिए इसके लिए खेत में 4 किलोग्राम ट्राईकोडरमा प्रति एकड़ के हिसाब से गोबर की खाद अथवा वर्मी कम्पोस्ट के साथ मिलाना चाहिए या गर्मी के समय खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए एवं 15–20 दिनों के लिए खेत को ऐसे ही रखना चाहिए । बुवाई से पहले कन्दो को बाविस्टिन अथवा थाईरम 2–3 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से अथवा ट्राईकोडरमा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से बीजोपचारित करना चाहिए । इनकी बुवाई के लिए उठी हुई डोलिया बनाकर कतारों में बीजी करनी चाहिए एवं बीजाई के पश्चात हल्की सिंचाई निश्चित रूप से करे अन्यथा गर्म मृदा में कंद अंकुरण क्षमता खो देते है । मृदा में नमी को सरंक्षित रखने के एवं समान अंकुरण के लिए कतारों पर आवरण बिछाना चाहिए इसके लिए पलाश, महुआ, नीम की पत्तियाँ अथवा चारा या फसल के अवशेषों का प्रयोग किया जा सकता है । अदरक में राइजोम के सड़ने की समस्या अधिक रहती है यह एक कवक जनित रोग है एवं इसके प्रकोप से शत प्रतिशत तक फसल खराब हो सकती है एवं यह रोग पौधे की किसी भी अवस्था में आ जाता है अतः इसके बचाव के लिए सप्ताह में एक बार सिंचाई के साथ या झारे से कवकनाशीयुक्त घोल से मृदा को उपचारित करे । रतालू की खेती में मुख्य खर्च कंदों का होता है क्यूंकि एक एकड़ में 800–1000 किलिग्राम कंदों की आवश्यकता होती है, 150–200 ग्राम के टुकड़े बुवाई के लिए अनुकूल रहते है, बीजोपचार के उपरान्त ही कन्दो की बुवाई करनी चाहिए । बुवाई के 12–15 दिनों बाद कन्दो में अंकुरण आरम्भ हो जाता है, अंकुरण के 10–15 दिन बाद लताओं को सहारे आवश्यकता होती है, इसलिए बुवाई के पश्चात 10–12 फीट की लम्बाई के बांस अथवा पेड़ों की डालियों को कतार में प्रति चार पौधे पर एक बांस के हिसाब से रोपना चाहिए, ध्यान रहे बांस अथवा लकड़ी को मजबूती से रोपना है क्यूंकि इन पर रतालू की लताओं का भार रहेगा एवं अगले 6–7 महीने तक ऐसे ही मजबूती से खड़ा रहना है अन्यथा फसल के लेटने से या बांस टूटने से उत्पादन में अत्यधिक कमी हो सकती है, रतालू की खेती में सबसे घातक समस्या एन्थ्राक्नोस रोग की होती है, इस बीमारी में प्रभावित पौध की पत्तियां सुखकर काली पड़ जाती है एवं शीघ्र पूरा पौधा मर जाता है, इसके उपचार के लिए कार्बेन्डाजिम एवं मेन्कोजेब का छिडकाव करते रहना चाहिए ।

पोलीहाउस किसानों के लिए मुख्य रूप से ध्यान देने वाले बिंदु इस प्रकार हैः

- पोलीहाउस में निरंतर साफ़ सफाई रखे जिससे खरपतवार के पौधे ना पनप पाए, अगर ये पौधे पनप गए तो इनके बीज पककर, बारम्बार उगते रहेंगे एवं पोलीहाउस में ये एक समस्या बन सकते है ।
- पोलीहाउस में उगने वाली वर्तमान फसल अगर उत्पादन नहीं भी दे रही है, अथवा इस फसल से कोई उम्मीद नहीं है तो भी पोलीहाउस में किसी प्रकार के कीटों एवं बीमारियों को नहीं फेलने दे एवं यथोचित नियंत्रण करते रहे अन्यथा ये कीट एवं बीमारियां पोलीहाउस को संक्रमित कर देगी जिससे अगली फसल में अधिक नुकसान हो सकता है ।
- अगर पोलीहाउस में कोई फसल नहीं है तो पोलीहाउस में गहरी जुताई कर दे, परिणामस्वरूप मृदा में पनप रहे कीट एवं बीमारियों के अंश एवं जीवाणु गर्मी के कारण स्वतः ही नष्ट हो जायेंगे ।
- पोलीहाउस की मृदा दशा सुधारने हेतु ऐसे समय में पोलीहाउस में कम खर्च से लगने वाली फसल जैसे ग्वारफली या अन्य कोई दलहनी फसल लगा सकते है ।
- आने वाले समय में पर्यटन की संभावित कमी को देखते हुवे अधिक लागत वाली एवं विदेशी सब्जियां जैसे चेरी टमाटर, सेलेरी, पार्सले, रंगीन शिमला मिर्च आदि की खेती करने से बचे ।
- इस दौर का उपयोग पोलीहाउस के शुद्धिकरण के लिए करें, अर्थात जहाँ तक संभव हो जेविक खेती करें क्योंकि अधिक उर्वरक देकर अधिक उत्पादन लेना, एक तरफ आपकी लागत बढ़ाएगा साथ ही आसपास शहरों से कम मांग आने के कारण बेचान में भी समस्या आ सकती है ।
- अगर पोलीहाउस में कोई फसल है तो पोलीहाउस के पर्दे सुबह आठ बजे से रात के आठ बजे तक खुले रखे एवं दिन में 12 से 5 बजे तक एक घंटे के अंतराल पर पोलीहाउस की छत पर लगे फव्वारे 10–15 मिनिट तक चलायेप
- पोलीहाउस में आदृता की अधिकता रहती है एवं साथ ही गर्मी के मौसम के कारण अधिक तापमान रहता है, यह अवस्था कवक जनित रोगों के लिए अतिअनुकुल रहती है अतः इन व्याधियों का विशेष ध्यान रखे ।